मीडिया की बदलती भाषा

डॉ. साकेत रमण

सहा. प्राध्यापक, मीडिया अध्ययन विभाग

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय बिहार

मोतिहारी

परिचय

- हाल के दिनों में भारतीय मीडिया के स्वरूप एवं प्रकृति में आमूल–चूल परिवर्तन देखने को मिलें हैं। 1992 ई.के बाद उदारीकरण के दौर में जनमाध्यम जनता के सरोकारों से दूर होते जा रहे हैं।
- मीडिया संगठन चरखा के 2005 के अध्ययन में यह बात पता चली कि मुख्यधारा की मीडिया में आम जनता के सरोकारों से जुड़े मात्र 2 फीसदी मुद्दों को ही जगह मिलती है।
- मीडिया की बदलती प्राथमिकता ने उसकी भाषा को भी व्यापक स्तर पर प्रभावित किया है। हालांकि इस भाषाई परिवर्तन को लेकर भी व्यापक स्तर पर बहस हो रही है। परिवर्तन के पैरोकार इसे जरूरी एवं फायदेमंद बताते हैं और विपक्षी भाषाई क्षरण एवं अपरदन की बात करते हैं।

- सन् 2000 में आजतक की शुरूआत के साथ भारत में टेलीविजन समाचार की दुनिया में एक नवीन परिवर्तन देखने को मिला। आजतक देश का पहला 24X7 समाचार चैनल था।
- टीआरपी और सबसे तेज की होड़ ने खबरिया चैनलों को गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा के एक ऐसे युग की ओर धकेला जहां **जो बिकेगा खबर वही बनेगा** समाचार की दुनिया का बोध वाक्य बन गया।
- संपादक संस्था का महत्व कम हुआ और विज्ञापन एवं विपणन ने न्यूज रूम को प्रभावित करना शुरू कर दिया। संपादक कंटेन्ट मैनेजर के रूप में कार्य करने को विवश हुए। और दौर शुरू हुआ शब्दों को तलाशने और गढ़ने का। शब्दों से खेलना शौक और शगल बनने लगा।

बदलते दौर के लोकप्रिय शब्द

- सफलता– कामयाबी।
- पाना– हासिल करना।
- हत्या– कत्ल या मर्डर।
- व्यक्ति– शख्स।
- व्यक्तित्व– शख्सियत।
- उपकार– मेहरबानी।
- राजनीति– सियासत।
- राज्य– सूबे।
- विश्वास– यकीन।
- चित्र– तस्वीर।

- दृष्टिकोण– नजरिया।
- कारण– वजह।
- दृश्य– नजारा।
- विवशता– मजबूरी।
- सावधानी– एहतियातन।
- अनुरोध, निवेदन– गुजारिश।
- स्वीकार– कुबूल।
- प्रगति– तरक्की।
- किंतु/परंतु– लेकिन।
- उत्सव– जश्न।
- आशा– उम्मीद।
- अंत– अंजाम।

- सच्चाई– हकीकत।
- प्रमुख– अहम।
- प्रमुखता– अहमियत।
- देश– मुल्क।
- न्याय– इंसाफ।
- चरित्र– किरदार।
- युद्ध– जंग।
- आरंभ– आगाज।
- उद्देश्य– मकसद।
- निर्णय– फैसला।
- अनुसार– मुताबिक
- उल्लेखनीय– गौरतलब।